निर्मल वर्मा के विचार

निर्मल वर्मा के साहित्य में पश्चिम की तार्किक अन्तर्दृष्टि और भारत की आस्था-विश्वास मूलक चेतना का मिलन है। उन्होंने पश्चिम की तार्किक अन्तर्दृष्टि से भारतीय आस्थाओं को परखा है तथा भारतीय आस्थामूलक चेतना के आधार पर पश्चिम की तर्कमूलक आधुनिक सभ्यता के अन्तर्विरोधों को महसूस किया है।

निर्मल वर्मा के अनुसार अंग्रेजी शिक्षा ने भारतीय मानस को अपनी समृद्ध सांस्कृतिक परंपरा तथा विशिष्ट अस्मिता से दूर कर दिया है। इसलिए आज भारतीय लोग संस्कृति, धर्म, ईश्वर, प्रकृति, आत्मन्, स्वतंत्रता, परम्परा, कला, साहित्य, भाषा, समाज, आदि शब्दों के वास्तविक अर्थ को भूल गये हैं।

निर्मल वर्मा के अनुसार भारतीय मानस के सामने सिर्फ एक ही विकल्प है। वे मानते हैं कि भारतीय मानस को विदेशी सत्ता के सांस्कृतिक हस्तक्षेप से मुक्त होकर अपनी परम्परा के बिखरे अंशों को इकट्ठा करना होगा। इससे ही नयी भारतीय संस्कृति का निर्माण हो सकता है।

निर्मल वर्मा की रचनाएँ

'वे दिन' 'आधुनिकताबोध' के सभी लक्षण मिलते हैं – 'अकेलेपन का बोध', 'विजातीय होने की अनुभूति', 'महायुद्ध का संत्रास', 'जीवन की व्यर्थता', 'उदासी', 'तनाव', 'अनिश्चय', आदि।

'लाल टीन की छत' में एक किशोरी के युवती बनने के बीच के अन्तराल की मनःस्थितियों का वर्णन है। इसमें युवती के मन में मौजूद 'रहस्य', 'अकेलापन', 'आतंक', 'भोलापन' आदि भावों का वर्णन है। लेकिन लेखक क्या कहना चाहता है यह साफ नहीं हो पाता।

'एक चिथड़ा सुख' के पात्र अपनी अधूरी जिंदगी जीते हैं और अपनी पहचान की तलाश में भटकते हैं। इसीलिए उनका सुख चिथड़ा है।

'एक रात का रिपोर्टर' में व्यक्ति और समाज के भय को व्यक्त किया गया है। इसमें जनतांत्रिक मूल्यों का समर्थन किया गया है।

'अन्तिम अरण्य' में मृत्यु से सम्बन्धित विषयों पर तर्क प्रस्तुत किये गये हैं। इस प्रकार यह उपन्यास दार्शनिक प्रश्नों की पहेली बन जाता है।